प्रातः क्लास 25-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहों से रूहानी बाप पूछते हैं कहां बैठे हो? तुम कहेंगे विश्व रूहानी युनिवर्सिटी में। रूहानी अक्षर तो वह लोग जानते नहीं। विश्व-विद्यालय तो दुनिया में अनेक हैं। यह है सारे विश्व में एक रूहानी विद्यालय। एक ही पढ़ाने वाला। क्या पढ़ाते हैं? रूहानी नालेज। तो यह है विश्व स्प्रीचुअल अथवा रूहानी पाठ-शाला। स्प्रीचुअल अर्थात रूहानी नालेज। उन्होंने नाम कहां से सुना है। बाकी स्प्रीचुअल अर्थात रूहानी नालेज पढ़ाने वाला कौन है यह अभी तुम बच्चे ही जानते हो। रूहानी बाप ही रूहानी नालेज पढ़ाते हैं। इसलिये उनको टीचर भी कहते हैं। स्प्रीचुअल फादर पढ़ाते हैं। अच्छा फिर क्या होगा। तुम बच्चे जानते हो इस रूहानी स्प्रीचुअल नालेज से हम अपना आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। एक धर्म की स्थापना, बाकी जो इतने सभी धर्म हैं उनका विनाश हो जावेगा। इस स्प्रीचुअल नालेज का सभी धर्मों से क्या तैलक है यह भी अभी तुम जानते हो। एक धर्म की स्थापना इस रूहानी नालेज से होती है। यह (ल०ना०) विश्व के मालिक थे ना। उनको कहेंगे रूहानी दुनिया। स्प्रीचुअल वर्ल्ड। इस स्प्रीचुअल नालेज से तुम राजयोग सीखते हो। राजाई स्थापन होती है। अच्छा फिर और धर्मों से क्या तैलक है। और सभी धर्म विनाश को पावेंगे। क्योंकि पावन बनते हो तो तुमको नई दुनिया चाहिए। इतने सभी अनेक धर्म खत्म हो जावेंगे। बाकी एक धर्म रहेगा। उसको कहा जाता है विश्व में शान्ति का राज्य। अभी है पतित अशान्ति का राज्य। फिर होगा पावन शान्ति का राज्य। अभी तो अनेक धर्म है। कितनी अशान्ति है। सभी पतित ही पतित हैं। रावण का राज्य है ना। अभी बच्चे जानते हैं 5 विकारों को जरूर छोड़ना है। यह साथ में नहीं ले जाना है। आत्मा अच्छी वा बुरी संस्कार ले जाती है ना। अभी बाप तुम बच्चों को पवित्र बनने की युक्ति बैठ बतलाते हैं। उस पावन दुनिया में कोई भी विकारी मनुष्य नहीं रहेगा। तुमको पढ़ाने वाला कौन है? स्प्रीचुअल फादर। सभी आत्माओं का बाप। स्प्रीचुअल फादर क्या पढ़ावेंगे? स्प्रीचुअल नालेज। इसमें कोई भी किताब आदि की दरकार नहीं। सिर्फ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है, पावन बनना है। बाप को याद करते2 अन्त मते सो गति हो जावेगी। यह है याद की यात्रा। मुसाफिरी कामन अक्षर है। यात्रा अक्षर अच्छा है। वह जिसमानी यात्राएं। यह है रूहानी2 उसमें तो पैदल जाना पड़ता, हाथ-पांव चलते हैं। इसमें कुछ भी नहीं। सिर्फ याद करना है। भल कहां भी घूमो फिरो, उठो-बैठो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। कठिन बात नहीं है। यह तो सच्ची है ना। आगे तुम उल्टी चल रहे थे। अपने को आत्मा के बदली शरीर समझना, इसको कहा जाता है उल्टी लटकना। अपने को आत्मा समझना यह है सूल्टा। मनुष्य कहते हैं ना अल्ला हूं। वास्तव में कहना चाहिए उल्लू हूं। अल्ला हू। अ यानि अल्ला वह एक बाप है। हम उल्लू हूं। अर्थ समझना है ना। ऐसे कह नहीं सकते कि अल्ला हूं। फिर तो सर्वव्यापी की बात हो जाती। अल्ला का बच्चा हूं। अल्ला जब आते हैं तो आकर पावन बनाते हैं। अल्ला की पावन दुनिया है। रावण की है पतित दुनिया। देह-अभिमान में उल्टी हो गये हैं सभी। अभी एक ही बार देही-अभिमानी बनना है। तो तुम अल्ला के बच्चे हो। अल्ला हूं नहीं कहेंगे। अंगुली से हमेशा ऊपर ईशारा करते हैं तो सिध होता है अल्ला हू। वहां अल्ला है तो जरूर यहां दूसरी चीज है। दो चीज़ जरूर है। हम उस अल्ला बाप का बच्चा हूं। हम भाई2 हैं। अल्ला हूं कहने से फिर उल्टा हो जावेंगे कि हम सभी बाप हैं। परन्तु नहीं। बाप एक है। उनको याद करना है। अल्ला एवर पवित्र है। अल्ला खुद बैठ पढ़ाते हैं। थोड़ी सी बात में मनुष्य कितना मुंझ गये हैं। शिवजयन्ति भी मनाते हैं ना। कृष्ण को ऐसा पद किसने दिया। शिवबाबा ने। श्रीकृष्ण है स्वर्ग का फर्स्ट प्रिन्स। यह बेहद का बाप उनको राज-भाग देते हैं। बाप जो नई दुनिया स्वर्ग स्थापन करते हैं उसमें श्रीकृष्ण है नम्बरवन प्रिन्स। बाप बच्चों को पावन बनने की युक्ति बैठ बतलाते हैं। बच्चे जानते हैं स्वर्ग जिसको वैकुण्ठ पुरी कहते हैं वह फास्ट हो गया है। फिर भविष्य में होगा। चक्र फिरता रहता है ना। यह ज्ञान अभी तुम बच्चों को मिलता है। यह धारण कर और कराना है। हरेक को टीचर बनना है। ऐसे भी नहीं कि टीचर बनने से ल०ना० बनेंगे। नहीं। टीचर बनने से तुम प्रजा बनावेंगे। जितना बहुतों का कल्याण करेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। स्मृति रहेगी घड़ी2, बाबा कहते हैं ट्रेन में आते हो वहां भी बैज पर समझाओ। बाप पतित-

25-10-68

2

पावन लिबरेटर है। पावन बनाने वाला है। बहुतों को याद करने से वरसा नहीं मिलेगा। एक को याद करने से ही वरसा मिलता है। अनेकों को याद करते रहेंगे तो वरसा कैसे मिलेगा। वरसादेने वाला है हो एक बाप। भक्ति-मार्ग में अनेकों को याद करना पड़ता है। जानवर हाथी घोड़े आदि कच्छ मच्छ को याद करना पड़ता है। उनको भी पूजते रहते। चिट्टी में भी भगवान समझ उनको खिलाते हैं। क्योंकि समझते हैं भगवान सर्वव्यापी है। अर्थात सभी में हैं। सभी को खिलाओ। अच्छा कण2 में भगवान कहते हैं फिर उनको कैसे खिलावेंगे। बिल्कुल ही समझ से जैसे बाहर है ना। बिल्कुल वेसमझ कहा जाता। ल०ना० आदि देवतायें यह थोड़ेही काम करेंगे, चिट्टयों को देंगे। फलाने को देंगे। तो बाप बैठ समझाते हैं तुम हो रीलिजीयो पोलीटिकल। तुम जानते हो हम धर्म स्थापन कर रहे हैं। इनकागानिटो पोलीटिकल है। राज्य स्थापन करने लिये मिलिट्री रहती है ना। परन्तु तुम हो गुप्त। तुम्हारी है स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी। सारी दुनिया के जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी को इन सभी धर्मों से निकाल ले जावेंगे घर। आत्मायें चली जावेंगी। वह है आत्माओं का रहने का घर। अभी तुम संगम युगपर पढ़ रहे हो। फिर सतयुग में आकर राज्य करेंगे। और कोई धर्म न होगा। गीत में भी है ना बाबा आप जो कुछ देते हो और कोई दे न सके। सारी आसमान, सारी धरती ही हमारी रहती हैं। सारे विश्व के मालिक तुम बनते हो। यह भी अभी तुम समझते हो। नई दुनिया में यह सभी बातें भूल जावेंगे। इसको कहा जाता है रूहानी स्प्रीचुअल नालेज। तुम बच्चों की बुधि में है हम हर 5000 वर्ष बाद राज्य लेते हैं। फिर गंवाते हैं। यह 84 का चक्र फिरता ही रहता है। तो पढ़ाई पढ़नी पड़े। तब ही जा सकेंगे ना। पढ़ेंगे ही नहीं तो नई दुनिया में जा नहीं सकेंगे। वहां का तो लिमिटेड नम्बर हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार वहा जाकर पद पावेंगे। इतने $4\frac{1}{2}$ सौ करोड़ तो पढ़ेंगे नहीं। अगर सभी पढ़ें तो फिर दूसरे जन्म में राज्य पावे। पढ़ने वालों का लिमिट है। सतयुग त्रेता में आने वाले ही पढ़ेंगे। तुम्हारी प्रजा बहुत बनती रहती हैं। पीछे से आने वाले याद से पाप तो भस्म कर न सकेंगे। पापात्मायें होंगे तो फिर सजा खाकर बहुत छोटा पद पा लेंगे। बेईज्जत होंगे। जो अभी माया के ईज्जत वाले हैं वह बेईज्जत बन जावेंगे। यह है ईश्वरीय ईज्जत। वह है आसुरी ईज्जत। ईश्वरीय अथवा देवी ईज्जत में कितना फर्क है। आसुरी ईज्जत वाले हम थे। अभी फिर देवी ईज्जत वाले बनते हैं। आसुरी ईज्जत से बिल्कुल ही हम बेगर बन जाते हैं। यह है ही कांटों की दुनिया। तो बेईज्जत हुई ना। फिर कितने ईज्जत वाले बनते हो। यथा राजा रानी तथा प्रजा। बेहद का बाप तुम्हारी ईज्जत बहुत ही ऊंच बनाते हैं। तो इतना पुरुषार्थ भी करना है। सभी कहते हैं हम अपनी ईज्जत कैसे बनावे अर्थात नर से नारायण नारी से लक्ष्मी बन जावें। इन से ऊंच ईज्जत कोई की है नहीं। कथा भी नर से ना० बनने की की है। अमर कथा, तीजरी की कथा यह एक ही है। यह कथा अभी तुम सुनते हो। तुम्हीं विश्व के मालिक थे। फिर 84 जन्म लेते2 नीचे गिरे हो। फिर पहला नम्बर का जन्म होगा। पहले नम्बर में तुम बहुत ही ऊंच पद पाते हो। फिर बिल्कुल बेईज्जत बन जाते हो। रावण ने तुमको कितना बेईज्जत बनाया है। बाप द्वारा तुम सम्पूर्ण निर्विकारी बने तो कितने ईज्जतवान थे। फिर पूज्य से पूजारी बने। अभी फिर तुम पूज्य ईज्जतवान बनते हो। अभी तो बेईज्जत ऐसे हैं जो एकदम देवताओं के आगे उन्हों के चरणों में गिरते हैं। कितने बेईज्जत हैं। सतयुग है ईज्जत की दुनिया। वहां कोई दुःख की बात नहीं होती। कितना तुम ईज्जत वाले पूज्य बनते हो फिर पुजारी बेईज्जत वाले बन पड़ते हो। राम ईज्जतवान बनाते हैं, रावण बेईज्जतवान बनाये देता है। इस नालेज से ही तुम मुक्ति जीवनमुक्ति पाते हो। आधा कल्प रावण का नाम नहीं होता। यह बातें अभी तुम बच्चों की बुधि में है। सो भी नम्बरवार। कल्प2 तुम ऐसे ही नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझदार बनते हो। माया गफलत कराती है ना। बेहद के बाप को याद करना ही भूल जाते हैं। भगवान पढ़ाते हैं वह हमारा टीचर है और फिर और अपसेन्ट रहते हैं। पढ़ते नहीं हैं। दर दर धक्के खाने की आदत पड़ जाती है। पढ़ाई पर जिनका ध्याननरहता है उन्हों को फिर नौकरी में लगा देना होता है। धोबी का काम करते हैं उसमें पढ़ाई की क्या दरकार है। व्यापार में मनुष्य मलटी मिलीयन बन जाते हैं। पढ़ाई से इतना नहीं बनेंगे। उनमें तो फिक्स पे मिलेगा। अभी तुम्हारी पढ़ाई है विश्व की बादशाही। यहां कहते हैं ना हम भारत-

के वासी हैं। पीछे फिर तुमको कहेंगे विश्व के मालिक। हां देवी देवता धर्म के सिवाय दुसरा कोई धर्म होता ही नहीं। बाप तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं तो उनकी श्रीमत पर चलना चाहिए ना। कोई भी विकार का भूत न होना चाहिए। काम के भूत वाले को कहते हैं यह तो कामी कुता है। यह भूत बहुत ही खराब है। कामी कुते के हेल्थ बिगड़ हुये होते हैं। ताकत कम हो जाती है। बच्चे जानते हैं इन काम विकार ने तुम्हारी ताकत बिल्कुल कम/वर दी है। नतीजा यह हुआ आयु कमती होती गई है। भोगी बन पड़े हो। कामी भोगी रोगी सभी बन जाते हैं। वहां विकार होता नहीं तो योगी होते हैं। सदैव तन्दुरुस्ती। आयु भी 150 वर्ष की होती है। वहां काल खाता ही नहीं। वह है ही सुखधाम। इस पर एक कथा भी सुनाते हैं। कोई से पूछा गया पहले सुख चाहिए या पहले दुःख। तो उनको कोई ने ईशारा दिया बोलो सुख चाहिए। क्योंकि सुख में चले जावेंगे तो वहां कोई काल आवे आवेगा नहीं। रावण राज्य ही नहीं। फिर जब विकारी बनते हैं तो काल आता है। कथाएं कितनी सुनाई है काले ले गया फिर यह हुआ। न काल देखने में आता है, न आत्मा ही दिखाई पड़ती है। इनको कहा जाता है दन्त-कथा। कनरस। बहुत कहानियां हैं। बापअब बैठ सभी बातें समझाते हैं। वहां अकाले मृत्यु कब होता ही नहीं। आयु भी बड़ी होती है। और पवित्र भी रहते हैं। 16कला, 14 कला फिर कला कम होते2 एकदम नो कला हो जाता है। मैं निर्गुण हारे में कोई भी गुण नाहीं ...। निर्गुण संस्था भी है। जिन बच्चों में कोई गुण नहीं है उनकी संस्था है। कहते हैं हमारे में कोई गुण नाही। हमको गुणवान बनाओ। सर्वगुण सम्पन्न .. बनाओ। अभी बाप कहते हैं पवित्र बनना है। मरना भी जरूर है सभी को। इतने ढेर मनुष्य सतयुग में होते ही नहीं। अभी तो कितने ढेर हैं। वहां बच्चे भी पैदा योगबल से होते हैं। यहां तो देखो कितने बच्चे पैदा करते रहते हैं कुतरों मिसल। बाप फिर भी कहते हैं बाप को याद करो। वह बाप ही पढ़ाते हैं। टीचर पढ़ाने वाला याद पड़ता है ना। तुम जानते हो शिव बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। क्या पढ़ाते हैं वह भी तुमको मालूम है। तो बाप अथवा टीचर से योगबल लगाना है। नालेज बहुत ऊंची है। अभी तुम सभी की स्टुडन्ट लाईफ है। ऐसी युनिवर्सिटी कबदेखी जहां बूढ़े बच्चे जवान आदि सभी इकट्ठे पढ़ते हैं। एक ही स्कूल, एक ही पढ़ाने वाला टीचर। ऐसी युनिवर्सिटी कबदेखी जिस में 12वर्ष का भी बैठ पढ़ते हैं। वन्डर है ना। शिव बाबा तुमको पढ़ाते हैं। यह भी सुनते हैं। तुम भी पढ़ते थे। जब कि तुम छोटे2 बच्चे थे। अभी पढ़कर पढ़ानेशुरू कर दिये हो। दिन प्रति दिन टाईम कम होजाताहै। अभी तुम बेहद में चले गये हो। जानते हो यह5000वर्ष का चक्रकैसे पास होता है। पहले तो एक धर्म था। कितने धर्म अभी हो गये हैं। अभी वारन्टी नहीं कहेंगे। इनको कहा जाता है, प्रजा का प्रजा पर राज्य। कौरव राज्य। महाराजा महारानी है नहीं। इसलिये कहा जाता है सयुलर स्टेट्स। धर्म है नहीं। कोई भी धर्म में ईमान नहीं। इसलिये मुसलमानलोग हिन्दु को काफिर कहते हैं। कोई भी धर्म को नहीं मानते। अ कहते हैं हम अधर्मी हैं। सारे विश्व के मालिक थे। अभी अधर्मी बन पड़े हैं। कोई धर्म नहीं है। परन्तु पत्थर बुधि यह नहीं समझ नहीं सकते। सभी में 5विकार प्रवेश हो गये हैं। बेहद का बाप कहते हैं अभी धैर्य धरो। बाकी थोड़ा समय है। तुम इस रावण राज्य में हो। अच्छी रीत पढ़ेंगे तो फिर सुखधाम में चले जावेंगे। यह है दुःख धाम। तुम अपने शान्तिधाम और सुख धाम को याद करो। इस दुःखधाम को भूलते जाओ। बाप आत्माओं को डायरेक्शन देते हैं हे रूहानी बच्चों। रूहानी बच्चों ने इस आरगन्स द्वारा सुना। तुम आत्मायें सतयुग में सतोप्रधान थे। तो तुम्हारा शरीर भी सतोप्रधान था। तुम बड़े हीधनवान थे। फिर पुनर्जन्म लेते2 क्या बन गये हो। रात-दिन का फर्क है। दिन में हम स्वर्ग में थे। रात में फिर नर्क में हैं। इसको कहा जाता है ब्रह्मा का दिन। ब्राह्मणों का दिन। फिर ब्राह्मणों की रात है नर्क। 63 जन्मधक्के खाते रहते हैं। अंधियारी रात है ना। भटकते रहते, भगवान कोई को मिलता ही नहीं। इसको कहा जाता है भूलईया का खेल। तो बाप तुम बच्चों को सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज समझाते हैं। कैसे 84 का चक्र लगाया। उनको 5000वर्ष हुये। मनुष्य कहते हैं लाखों वर्ष। तुम कहेंगे यह तो सभी मूर्ख हैं। रचयिता के आदि मध्य अन्त को नहीं तो मूर्ख कहेंगे। यह बड़े अक्षरों में लिख दो। पढ़ें और पूछे। डरने की बात नहीं। बच्चों को गुडमार्निंग।